ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

(A UGC-recognized Peer-reviewed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year-46 • Vol. 181-182 • Issue: January-June, 2019

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
A University dedicated to Oriental Studies & Human Values
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Scanned by CamScanner

Tulsī Prajñā

Contents

Āgama

Ācārya Mahāprajña 5

Articles

व्याख्या साहित्य में नपुंसक की अवधारणा 15
प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा

भगवतीसूत्र में प्रतिपादित धार्मिक उदारता 24
प्रो. प्रेमसुमन जैन

'*Skambha*' and '*Jyeṣṭha-brahman*' in the *Atharvaveda-saṃhitā*: Vedic Cosmogony towards Vedantic Theory 34
Dr. Gargi Bhattacharya

दशवैकालिक सूत्र की टीकाओं में वर्णित जीवन प्रबंधन के सूत्र 46
डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा

Effect of Prolong Fasting on Human Health (Part II) 65
Dr Pratap Sanchetee

Definition and Boundaries of Knowledge in Logical Positivism and *Advaita Vedānta* Theory 79
Gurumukh Singh

Scanned by CamScanner

व्याख्या साहित्य में नपुंसक की अवधारणा

Tulsī Prajñā
46 (181-182)
ISSN : 0974-8857

प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा*

सारांश

जैनागम ज्ञान के अक्षय कोष हैं। सूत्र–शैली में निबद्ध इन आगम साहित्य में ज्ञान, आचार, तत्त्व, दर्शन आदि अनेक विषय समाविष्ट हैं। आगमों के गहन तत्त्वों को समझने के लिए विशाल परिमाण में व्याख्या–साहित्य रचा गया है। इन व्याख्या–ग्रन्थों में विविध विषयों का सांगोपांग विवेचन प्राप्त होता है, जिनमें एक विषय है–नपुंसक।

स्त्री और पुरुष से भिन्न तीसरी प्रजाति है–नपुंसक, जिसका समाज में अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। सिद्ध के 15 भेदों में एक भेद 'नपुंसक सिद्ध' है। जैन दर्शन के अनुसार जन्मजात नपुंसक मोक्ष का अधिकारी नहीं होता है। भाष्य साहित्य में नपुंसक के भेद, शारीरिक लक्षण आदि के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। पंचकल्प सभाष्य में दीक्षा के अयोग्य बीस व्यक्तियों के प्रसंग में नपुंसक का विस्तार से वर्णन किया गया है। बौद्ध और वैदिक–साहित्य में नपुंसक के बारे में इतना वर्णन नहीं मिलता। प्रस्तुत आलेख के माध्यम से नपुंसक के लक्षण, जैसे महिला–स्वभाव, स्वर और वर्ण की भिन्नता, लिंग, वाणी, आदि पर समग्रता से विचार किया गया है। उनमें कौन–सा वेद होता है ? इत्यादि प्रश्नों का सतर्क समाधान इसमें मिलता है। इसके साथ ही नपुंसक के सोलह भेदों पर भी प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार, यह वर्णन इस क्षेत्र में शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए अत्यन्त नवीन एवं उपयोगी होगा।

मुख्य शब्द : पंचकल्प सभाष्य, नपुंसक, पण्डक, क्लीब, वेद।

* **प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा,** प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

Scanned by CamScanner